

2, 29, 8. VARĀH. BRH. S. 68, 89. 114. नर° 116. तल्लक्षणज्ञ seine guten Merkmale erkennend BHĀG. P. 1, 19, 28.

लक्षणज्ञ n. das eine-Definition-Sein: काव्य° SĀH. D. 5, 8.

लक्षणलक्षणा f. Bez. einer best. elliptischen oder metonymischen Ausdrucksweise SĀH. D. 15. SARVADARĀṢANAS. 173, 5.

लक्षणवत् adj. 1) gekennzeichnet: षड्विंशत्लक्षणवन्ति: (so die ed. Bomb.) MBH. 12, 9077. mit guten Zeichen versehen R. GORR. 2, 118, 5. — 2) त्रिंशत्लक्षणवत् dreissig Erscheinungsformen habend: धर्म BHĀG. P. 7, 11, 12.

लक्षणवाद्दरुस्य n. Titel einer Schrift HALL 61.

लक्षणसंग्रह m. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 341, a, 39.

लक्षणसंनिपात m. Brandmarkung R. 5, 48, 6 (52, 15 ed. Bomb.).

लक्षणसमुच्चय m. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 279, a, 36. 336, a, No. 790.

लक्षणान् adj. = लक्षणज्ञ R. GORR. 2, 29, 9.

लक्षणीय (von लक्ष्य) adj. 1) sichtbar oder zu vermuthen, anzunehmen RAGH. 11, 63. — 2) was elliptisch, metonymisch ausgedrückt wird KUSUM. 32, 8.

लक्षणोक्त (लक्षण + ऊक्त) adj. f. ° P. 4, 1, 70. — Vgl. लक्ष्मणोक्त.

लक्षणय (von लक्षण) adj. 1) als Merkmal dienend: वृत्त PĀR. GAṂ. 3, 15. — 2) mit guten Zeichen versehen JĀLĀN. 1, 52. 80. MBH. 13, 2509. 5599. R. 2, 109, 5. सर्वलक्षण° PAÑĀR. 4, 3, 42. st. अलक्षणयं (दिवाकाम्) kein rechtes Aussehen habend MBH. 6, 5209 liest die ed. Bomb. अलक्ष्माणम्.

लक्षदत्त m. N. pr. eines Fürsten KATHĀS. 53, 8. fgg.

लक्षपुर n. N. pr. einer Stadt KATHĀS. 53, 9.

लक्ष्य (von लक्ष्), लक्ष्यति, ऽने DHĀTUP. 32, 5 (दर्शनाङ्कयोः). 33, 23 (आलोचने). 1) bezeichnen, kennzeichnen: अङ्कितैश्च ताः सर्वा (गाः) लक्ष्यामास MBH. 3, 14852. लक्षित bezeichnen, gekennzeichnet, erkennbar an: सर्वलक्षणालक्षित 1, 5434. R. 1, 45, 41. 7, 37, 24. MĀRK. P. 34, 77. 66, 25. शुभलक्षणालक्षित R. GORR. 2, 26, 18. राजलक्षणालक्षित 3, 36, 6. राजतैर्धातुभिश्चित्रैर्देशे देशे च लक्षितः (गिरिः) 24, 14. वक्तसि लक्षितं श्रिया BHĀG. P. 2, 9, 15. सर्वप्रसूतिर्हि बीजलक्षणालक्षिता M. 9, 35. R. 5, 86, 5. उन्मेषनिमेषाभ्याम् BHĀG. P. 9, 13, 11. तथा (अशनायया) लक्षितेन मृत्युना ÇĀṢĀK. zu BRH. ĀR. UP. S. 42. अलक्षित ÇĀT. BR. 3, 3, 4, 16. KĀTJ. ÇĀ. 7, 6, 14. — 2) näher bezeichnen, definiren NILAK. 46. Schol. zu KĀP. 1, 101. — 3) mittelbar bezeichnen, — ausdrücken: अत्र गोशब्दः — बाहीकार्थं लक्षयति SĀH. D. 15, 7. 107, 19. fgg. VEDĀNTAS. (Allah.) No. 104. तेनार्थनार्थान्तरं लक्ष्यते SARVADARĀṢANAS. 173, 1. 172, 11. प्रजापतिर्हि — अङ्गा लक्ष्यते ÇĀṢĀK. zu BRH. ĀR. UP. S. 24. वषट्कारेणैव वषट्कारेण लक्ष्यते KĀÇ. zu P. 1, 2, 35. Schol. zu P. 4, 3, 80. गोसङ्घारिणो गुणा ज्ञायमान्यादयो लक्ष्यते sind gemeint SĀH. D. 14, 16. यस्य कस्यचिदर्थस्य लक्षितत्वे VEDĀNTAS. (Allah.) No. 103. — 4) auf ein Ziel richten: शरास्तीव्राः पतिष्यन्ति रामलक्ष्मणालक्षिताः R. 5, 23, 20. — 5) bezeichnen als, nennen: कालस्यानुगतिर्या तु लक्ष्यते ऽप्यो बृहत्पि BHĀG. P. 2, 8, 13. सा लक्ष्यतां (लक्षितां BR.) प्रभावती ÇĀUT. 33. — 6) bezeichnen als so v. a. halten —, ansehen für: तुल्यं हि लक्ष्ये ज्ञानं बाहुकस्य नलस्य च MBH. 3, 2800. न ते ऽस्त्यविदितं किंचिदिति वा लक्ष्याम्यहम् 10575. तस्य वाक्यस्य पर्यायं पर्याप्तमिव लक्ष्ये HARIV. 9682. अन्यत्र नेत्रज्ञः पुत्रे लक्ष्यते MBH. 13, 2629. fgg. जडन्धविधिरान्मत्तमकाकृतिः — लक्षितः पथि बालानाम् BHĀG. P. 4, 13, 10.

VI. Theil.

— 7) sein Augenmerk richten auf, beachten, untersuchen: अथं लक्ष्यित्वाज्ञापत ÇĀṢĀK. zu BRH. ĀR. UP. S. 24. zu KHĀND. UP. S. 88 (wo अथि ल° d. i. अथि = ल° zu lesen ist). चरितान्यस्य लक्ष्य MBH. 3, 2922. KĀM. NĪTIS. 7, 15. कौ। विमृदितत्रोर्लक्ष्यित्वा JĀLĀN. 2, 103. एवमन्ये पि भेदाः — न पृथग्लक्षिताः SĀH. D. 211, 7. Z. d. d. m. G. 7, 311, N. 4. Verz. d. Oxf. H. 181, a, 36. मुलक्षित M. 8, 403. — 8) (an bestimmten Zeichen) erkennen: गतिचेष्टाविकारिश्च रूपतो भाषितैस्तथा । लक्ष्यस्व तयोर्भावं दुष्टाडुष्टम् R. 4, 1, 28. एभिर्लक्षणीर्लक्ष्येयाः — भवनम् MBH. 78. इङ्गितैर्लक्ष्यमास नैयं सीतेति निश्चितम् R. 5, 14, 38. लक्ष्ये ऽस्वस्थमात्मानं भवत्या लक्षणीरुक्म् BHĀG. P. 8, 16, 10. न चोभावप्यलक्ष्येताम् BHĀTĪ. 17, 106. लक्ष्यते ज्ञायते ऽनेनेति लक्षणम् Schol. zu ÇĀIM. 1, 1, 2. एवं प्रादेक्षं कर्म लक्ष्यते चित्तवृत्तिभिः BHĀG. P. 4, 29, 63. 1, 8, 19. VIKR. 53. अनेन वपुषा बाला पिप्पुनानेन सूचिता । लक्षितेयं मया देवी निभूतो ऽग्निर्विवोष्मणा MBH. 3, 2702. Spr. 1824. BHĀG. P. 2, 2, 35. 3, 27, 13. 4, 22, 2. — 9) bemerken, wahrnehmen, erblicken; act. MAITREJUP. 6, 10. M. 12, 27. MBH. 4, 82. R. 2, 63, 45. 6, 92, 24. ÇĀK. 140. KĀM. NĪTIS. 4, 37. Spr. 3891. KATHĀS. 10, 168. RĀGA-TAR. 4, 497. 6, 59. DAÇAK. in BENF. Chr. 184, 9. 186, 15. BHĀG. P. 4, 8, 27. med. MBH. 1, 5924. 3, 2205. R. GORR. 2, 60, 8. 5, 31, 7. ÇĀK. 69, 8. BHĀG. P. 4, 22, 9. 10, 41, 3. ज्ञापयिष्ये चास्माभिः शक्या लक्षयितुं न ते KATHĀS. 112, 149. तां लक्षयित्वा MBH. 3, 2395. न कृस्ती चायतः प्रयाणे लक्ष्यते R. 2, 26, 16. पादशं लक्ष्यते रूपम् 93, 6. लक्ष्यते बन्धुजीवाश्च श्यामाश्च गिरिसानुषु 4, 29, 12. 40, 43. SUGR. 1, 243, 4. RAGH. 9, 72. ÇĀK. 38. RĀGA-TAR. 3, 378. BHĀG. P. 4, 18, 43. 4, 17, 32. 21, 26. HIT. 20, 14. योगप्रभावा न च लक्ष्यते ते RAGH. 16, 7. भगवतो गुरुषु गुरुमेधिनाम् — न लक्ष्यते ह्यवस्थानमपि BHĀG. P. 4, 19, 39. 3, 26, 14. R. 2, 26, 18. 33, 34. 60, 8. 3, 68, 50. VARĀH. BRH. S. 86, 7. KATHĀS. 47, 54. MĀRK. P. 16, 37. HIT. 25, 10. यदा विनाशकालो वै लक्ष्यते देवनिर्मितः erblickt wird so v. a. erscheint, sich einstellt Spr. 4808. लक्षितं bemerkt, erblickt, wahrgenommen, gesehen MBH. 3, 2155. 2699. 2935. RAGH. 7, 41. ÇĀK. 98, 15. Spr. 2103. KATHĀS. 43, 259. BHĀG. P. 4, 23, 13. PAÑĀT. 225, 25. SĀH. D. 38, 19. साधु लक्षितमयमागतः MĀRK. 117, 25. अलक्षितं unbemerkt MBH. 1, 5879. 3, 2158. R. 4, 40, 37. RAGH. 2, 27. ÇĀK. 90. KĀM. NĪTIS. 12, 48. KATHĀS. 7, 83. 13, 87. 16, 57. 18, 157. RĀGA-TAR. 6, 48. 270. DAÇAK. in BENF. Chr. 186, 12. स्वलक्षितं durchaus nicht bemerkt BHĀG. P. 2, 3, 20. अलक्षितम् adv. KATHĀS. 28, 103. 34, 46. mit folgendem यद् sehen, dass: जनास्वलक्ष्यन्तस स्वयं पीठमवातरत् RĀGA-TAR. 3, 458. sehr häufig mit einem zweiten appositionellem acc. (nom. bei pass. Constr.) construiert: तं तदैकाग्रमनसं कृष्णः पार्थमलक्षयत् MBH. 1, 7920. 13, 2765. R. GORR. 2, 6, 14. 3, 1, 1. 2. 4. 33, 29. MĀLAV. 29, 1. KUMĀRAS. 3, 51. भवत्यनपगान्सर्वीस्तान्गुणान् लक्षयामहे MBH. 12, 8029. R. 1, 9, 44 (43 GORR.). ÇĀK. 16, 20. BHĀG. P. 4, 14, 13. 17, 36. 6, 14, 21. लक्षयित्वा चात्मानं तेजोकीनम् MBH. 1, 8142. 4, 1056. 13, 475. R. 7, 28, 1. PAÑĀT. 33, 5 (29, 7 ed. OFD.). तौलक्ष्य (= लक्षयित्वा) वित्रस्तान् R. 7, 15, 1. स दक्षिणं तूणामुखेन वामं व्यापारयन्कृत्स्नमलक्षयताञ्जौ RAGH. 7, 54. 9, 43. Spr. 1639. 1842. ÇĀK. 169. RĀGA-TAR. 1, 167. 3, 523. लक्षिताहं त्वया तत्र वायसेन प्रकापिता R. 5, 36, 41. 47, 23. Spr. 3807. KATHĀS. 42, 208. 49, 45. mit इव nach dem appositionellem acc. (nom. bei pass. Constr.): अस्वस्थमिव चात्मानं लक्ष्ये MBH. 3, 16750. नातिस्वस्थेव लक्ष्यते aussehen, zu sein scheinen 2110. 16721. 8, 1813. R. 2, 91, 43. 93,